महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र

द्वारा विश्वविद्यालय के

क्षेत्रीय केंद्र इलाहाबाद

के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित पांच दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला

दिनांक 15-21 फरवरी, 2019

प्रतिवेदन/रिपोर्ट

भाषा एक प्रवाह : न्यायमूर्ति सुधीर नारायण

दिनांक-15.02.2019

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र ,इलाहाबाद में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, भारत सरकार के पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक तथा शिक्षण अभियान (TLCHS) के अंतर्गत संचालित हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा 15 से 21 फरवरी-2019 तक आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का उद्घाटन इलाहाबाद उच्च न्यायालय के **प्रख्यात पूर्व न्यायाधीश श्री सुधीर नारायण** जी तथा विश्व हिंदी सचिवालय के पूर्व महासचिव डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया | इस अवसर पर केंद्र प्रभारी डॉ. विधु खरे दास, डॉ.प्रकाश त्रिपाठी ने भी दीप प्रज्ज्वलित कर किया | तत्पश्चात केंद्र की प्रभारी डॉ. विधु खरे दास, सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. प्रकाश त्रिपाठी, अनुभाग अधिकारी श्री शम्भू दत्त सती एवं डॉ. कमलेश यादव ने मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति सुधीर नारायण तथा मुख्य वक्ता डॉ.राजेन्द्र प्रसाद मिश्र जी को पुष्पगुच्छ, अंगवस्त्रम, प्रतीक चिन्ह देकर उनका स्वागत किया | केंद्र की प्रभारी डॉ. विधु खरे दास ने स्वागत भाषण दिया | केंद्र के सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. प्रकाश त्रिपाठी ने केंद्र के बारे में तथा सात दिन तक चलाने वाली कार्यशाला का विषय विस्तार से बताया |

कार्यशाला का विषय **"<u>हिंदी का वैश्विक स्वरुप / विश्वव्यापी हिंदी</u>"** था | सबसे पहले मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति सुधीर नारायण ने अपने वक्तव्य में कहा कि - 'भाषा एक प्रवाह है जो समय तथा जगह के साथ बदलता रहता है | शब्द भाषा के प्राण हैं ,तथा नित्य प्रति प्रयत्न करते रहने से अच्छा और प्रभावशाली लेखन किया जा सकता है | सरल तथा प्रचलित शब्दों का प्रयोग भाषा को रोचक बनाता है तथा अन्य भाषाओँ के शब्दों को सीधे एवं बड़ी मात्रा में स्वीकार करना भाषा विकास की प्रक्रिया को बाधित करता है |' इसी प्रकार कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र ने **'<u>हिंदी का वैश्विक स्वरुप / विश्वव्यापी हिंदी</u>' विषय पर अपना व्याख्यान दिया |** डॉ. मिश्र ने कहा कि ' भाषा आपको संस्कृति प्रदान करती है | भाषा के नष्ट हो जाने पर संस्कृति खुद नष्ट हो जाती है तथा हम

किसी भी भषा को किसी भी लिपि में लिख सकते हैं|" इसी बीच मुख्य अतिथि ने प्रतिभागियों का परिचय लिया | उन्होंने सभी विश्व हिंदी सम्मेलनों की चर्चा की | कार्यक्रम में देश के विभिन्न प्रदेशों से प्रतिभागी उपस्थित हुए | ध्यातव्य है कि केंद्र की प्रभारी डॉ. विधु खरे दास कार्यक्रम की संयोजक हैं तथा सह संयोजक डॉ. प्रकाश त्रिपाठी हैं| **कार्यक्रम के अंत में पुलवामा में शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि देकर दो मिनट का मौन रखा गया | आज का कार्यक्रम पुलवामा में शहीद देश के सपूतों के नाम रहा** | कार्यक्रम का संचालन केंद्र के सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. प्रकाश त्रिपाठी ने किया | धन्यवाद ज्ञापन डॉ.कमलेश यादव ने किया |

कार्यक्रम का उद्घाटन करते न्यायमूर्ति सुधीर नारायण

न्यायमूर्ति सुधीर नारायण जी को पुष्पगुच्छ भेंट कर स्वागत करती केंद्र प्रभारी डॉ. विधु खरे दास

मंच पर डॉ.राजेन्द्र प्रसाद मिश्र ,डॉ. विधु खरे दास ,डॉ.प्रकाश त्रिपाठी तथा वक्तव्य देते न्यायमूर्ति सुधीर नारायण

दिनांक : 17.02.2019

अनुवाद संस्कृति का अग्रदूत है डॉ.राजेंद्र प्रसाद मिश्र

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र ,इलाहाबाद में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ,नई दिल्ली ,भारत सरकार के पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक तथा शिक्षण अभियान (TLCHS) के अंतर्गत संचालित हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा 15 से 21 फरवरी-2019 तक आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आज तीसरा दिन है | आज के कार्यक्रम का विषय **"हिंदी अनुवाद समस्याएँ और समाधान"** था | कार्यक्रम के मुख्य वक्ता डॉ.राजेन्द्र प्रसाद मिश्र थे | कार्यक्रम के आरम्भ में मुख्य वक्ता डॉ.राजेन्द्र प्रसाद मिश्र ने दीप प्रज्ज्वलित कर माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की गति को आगे बढ़ाया | तत्पश्चात केंद्र की प्रभारी डॉ. विधु खरे दास ,सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. प्रकाश नारायण त्रिपाठी ,डॉ. सोनू जेसवानी , डॉ.कल्पना वर्मा,डॉ.योगेश दानी,डॉ.रमेश सिंह ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण किया | स्वस्तिवाचन MSW के छात्र श्री अरुण त्रिपाठी ने किया | उसके बाद मुख्य वक्ता को केंद्र की प्रभारी डॉ. विधु खरे दास ने पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया | **हिंदी अनुवाद समस्याएँ और समाधान** विषय पर बोलते हुये डॉ.राजेन्द्र प्रसाद मिश्र ने कहा कि- **अनुवाद** के लिए 'भाषांतर' और 'रूपांतर' का प्रयोग भी किया जाता रहा है। लेकिन अब इन दोनों ही शब्दों के नए अर्थ और उपयोग प्रचलित हैं। 'भाषांतर' और 'रूपांतर' का प्रयोग अँग्रेजी के INTERPRETATION शब्द के पर्यायस्वरूप होता है-, जिसका अर्थ है दो व्यक्तियों के बीच भाषिक संपर्क स्थापित करना। आगे डॉ.मिश्र ने अनुवाद की समस्याओं पर चर्चा की | उन्होंने अनुवाद के सिद्धांत, उसके प्रकार और अनुवाद करने में आने वाली कठिनाइयों पर सुन्दर तरीके से समझाया | अनुवाद पर डॉ. मिश्र ने भारत सरकार के प्रयासों की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि सरकार अनुवाद के विभिन्न आयामों के लिए सतत प्रयासरत है | अंत में डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र ने अनुवाद को संस्कृति का अग्रदूत बताया |

कार्यक्रम में प्रतिभागी के रूप में आये देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों / महाविद्यालयों से आये अध्यापक एवं शोध-छात्र तथा इलाहाबाद केंद्र के शिक्षक / कर्मी एवं छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहे जिनमें प्रमुख हैं- डॉ. योगेश दानी ,डॉ. रमेश सिंह ,डॉ. रामपाल गंगवार ,डॉ.कल्पना वर्मा ,डॉ. जेसवानी ,सुन्दरम शांडिल्य आदि | ध्यातव्य है कि केंद्र की प्रभारी डॉ. विधु खरे दास कार्यक्रम की संयोजक हैं तथा सह संयोजक डॉ. प्रकाश त्रिपाठी हैं| कार्यक्रम का संचालन डॉ. नरेंद्र दिवाकर ने किया | धन्यवाद ज्ञापन श्री नरेंद्र दिवाकर ने किया | कार्यक्रम केंद्र के सत्यप्रकाश मिश्र सभागार के भरतमुनि प्रेक्षगृह में सम्पन्न हुआ |

'हिंदी अनुवाद समस्याएँ और समाधान' विषय पर व्याख्यान देते मुख्य-वक्ता डॉ. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र'

देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों / महाविद्यालयों से आये अध्यापक एवं शोध-छात्र तथा इलाहाबाद केंद्र के शिक्षक / कर्मी एवं बड़ी संख्या में उपस्थित छात्र-छात्राओं को मुख्य वक्ता डॉ.राजेन्द्र प्रसाद मिश्र 'हिंदी अनुवाद समस्याएँ और समाधान' पर वक्तव्य देते हुए |

दिनांक : 18.02.2019

भाषा से ही व्यक्ति की पहचान : प्रो.रामकिशोर शर्मा

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र ,इलाहाबाद में मानव संसाधन विकास मंत्रालय ,नई दिल्ली ,भारत सरकार के पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक तथा शिक्षण अभियान (**TLCHS**) के अंतर्गत संचालित हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा 15 से 21 फरवरी-2019 तक आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आज चौथा दिन है | आज के कार्यक्रम का विषय **"हिंदी भाषा का मानकीकरण और देवनागरी की भूमिका"** था | कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रसिद्ध भाषा विज्ञानी तथा हिंदी विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष प्रो.रामकिशोर शर्मा थे | कार्यक्रम के आरम्भ में मुख्य वक्ता प्रो.रामकिशोर शर्मा ने दीप प्रज्ज्वलित कर माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम की गति को आगे बढ़ाया | तत्पश्चात केंद्र की प्रभारी डॉ. विधु खरे दास ,सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. प्रकाश नारायण त्रिपाठी ,डॉ. सोनू जेसवानी , डॉ.कल्पना वर्मा,डॉ.योगेश दानी,डॉ.रमेश सिंह ने मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण किया | स्वस्तिवाचन MSW के छात्र श्री अरुण त्रिपाठी ने किया | उसके बाद मुख्य वक्ता को केंद्र की प्रभारी डॉ. विधु खरे दास ने अंगवस्त्रम ,सूत की माला , पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया | **हिंदी भाषा का मानकीकरण और देवनागरी की भूमिका** विषय पर प्रो.रामकिशोर शर्मा ने कहा कि- भाषा ही व्यक्ति की पहचान कराती है | प्रत्येक व्यक्ति को समाज में उसकी अपनी भषा के कारण ही जाना जाता है | यही कारण है कि सभी को भाषा का सृजन स्वयं करना होता है | भाषा को लेकर डॉ. शर्मा ने भारत सरकार के सार्थक प्रयासों की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि सरकार भाषा के विभिन्न आयामों के गंभीर है | उन्होंने युवाओं को विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं में रोजगार के अवसरों से भी परिचित कराया | भाषा हमें संस्कारवान बनाती है ,जीवन देती है |

कार्यक्रम में प्रतिभागी के रूप में आये देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों / महाविद्यालयों से आये अध्यापक एवं शोध-छात्र तथा इलाहाबाद केंद्र के शिक्षक / कर्मी एवं छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहे | यह कार्यक्रम माननीय कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की प्रेरणा से संचालित किया जा रहा है | उपस्थित लोगों में- डॉ. योगेश दानी ,डॉ. रमेश सिंह ,डॉ. रामपाल गंगवार ,डॉ.कल्पना वर्मा ,डॉ. जेसवानी ,सुन्दरम शांडिल्य आदि | ध्यातव्य है कि केंद्र की प्रभारी डॉ. विधु खरे दास कार्यक्रम की संयोजक हैं तथा सह संयोजक डॉ. प्रकाश त्रिपाठी हैं | कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ.कमलेश यादव ने किया | कार्यक्रम केंद्र के सत्यप्रकाश मिश्र सभागार के भरतमुनि प्रेक्षागृह में सम्पन्न हुआ |

कार्यक्रम का शुभारम्भ करते मुख्य वक्ता प्रो. रामकिशोर शर्मा

देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों / महाविद्यालयों से आये अध्यापक एवं शोध-छात्र तथा इलाहाबाद केंद्र के शिक्षक / कर्मी एवं बड़ी संख्या में उपस्थित छात्र-छात्राओं को मुख्य वक्ता डॉ.रामकिशोर शर्मा 'हिंदी भाषा का मानकीकरण और देवनागरी की भूमिका' विषय पर वक्तव्य देते हुए |

मुख्य वक्ता प्रो.रामकिशोर शर्मा को अंगवस्त्रम प्रदान कर सम्मानित करतीं केंद्र प्रभारी डॉ. विधु खरे दास,सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ.प्रकाश त्रिपाठी तथा अनुभाग अधिकारी श्री शम्भू दत्त सती |

दिनांक : 20.02.2019

आज की कर्मशाला प्रख्यात समीक्षक स्मृति-शेष डॉ. नामवर सिंह के नाम

हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता की परख अत्यावश्यक

डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय

“विद्यार्थियों और अध्यापकों को स्वाध्याय करने की उदात्त परंपरा को विकसित करना होगा क्योंकि आज विश्व स्तर पर भाषिक अशुद्धियाँ (मौखिक और लिखित)की जा रहीं हैं और पुस्तकों में अशुद्ध और अनुपयुक्त शब्द लेखन हो रहे हैं ,उन्हें देखकर अब लगने लगा है कि वस्तुपरक परीक्षा पद्धति को समाप्त कर विषय और अध्ययन परक शिक्षा और परीक्षा पद्धति के प्रति उन्मुख होना होगा अन्यथा आज जिस तरह से न्यायालयों में ,प्रश्नपत्रों में अशुद्ध शब्द और विकल्प प्रस्तुत किये जा रहे हैं उससे हमारा न्यायालय भी किंकर्तव्यविमूढ़ सा दिख रहा है |” उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र ,इलाहाबाद की ओर से आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय कर्मशाला के अंतर्गत अपनी भाषिक श्रृंखला के तहत भाषाविद, समीक्षक डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय ने भाषा विशेषज्ञ के रूप में व्यक्त किया | अपने उद्बोधन के पश्चात डॉ. पाण्डेय ने देश के अनेक विश्वविद्यालयों ,महाविद्यालयों तथा अन्य शैक्षणिक संस्थानों से इस कर्मशाला में भाग लेने के लिए आये अध्यापकों ,विद्यार्थियों को दैनिक जीवन में प्रयोग किये जा रहे अशुद्ध और अनुपयुक्त शब्द प्रयोगों के प्रति व्याकरण स्तर पर जागरूक किया | इतना ही नहीं उन्होंने बड़ी संख्या में साहित्य ,भाषा ,व्याकरण ,कोष, सारांश लेखन,संक्षिप्त लेखन ,पत्र लेखन ,आलेखन एवं निबंध आदिक में प्रयुक्त शब्दों ,अर्थों को अनुचित और अशुद्ध ठहराते हुए,उनका व्युत्पत्तिगत वर्तनी सहित शुद्ध व्याकरणिक पक्ष से अवगत कराया | इसी अवसर पर प्रतिभागियों के प्रश्नों ,जिज्ञासाओं ,शंकाओं तथा समस्याओं से युक्त ,शब्द प्रयोगों को समग्र में समझाया | डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय ने अंत में प्रशिक्षणार्थियों की भाषा सामर्थ्य

पर करने के लिए पांच प्रश्नों की प्रतियोगिता भी कराई जिनमें से मात्र एक प्रतिभागी का सही उत्तर मिल सका | पूजा तिवारी एवं रश्मि निषाद को पारितोषिक के रूप में डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय ने अपनी ओर से समीक्षा के **वातायन** नामक पुस्तक प्रदान किया |

कार्यक्रम के अंत में हिंदी आलोचना के शिखर-पुरुष एवं महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ,वर्धा के पूर्व कुलाधिपति प्रो .नामवर सिंह के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किया गया |

कार्यक्रम में प्रतिभागी के रूप में आये देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों / महाविद्यालयों से आये अध्यापक एवं शोध-छात्र तथा इलाहाबाद केंद्र के शिक्षक / कर्मी एवं छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहे | ध्यातव्य है कि यह कार्यक्रम माननीय कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की प्रेरणा से संचालित किया जा रहा है | प्रशिक्षणार्थियों में - डॉ. योगेश दानी ,डॉ. आकांक्षा मिश्र ,डॉ. मोहिनी ,डॉ.कल्पना वर्मा , सुन्दरम शांडिल्य,कमलेश यादव,डॉ. अजय शुक्ल ,नरेंद्र दिवाकर ,अनुपमा राय आदि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे | ध्यातव्य है कि केंद्र की प्रभारी डॉ. विधु खरे दास कार्यक्रम की संयोजक हैं तथा सह संयोजक डॉ. प्रकाश त्रिपाठी हैं| कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ.ऋचा द्वेदी ने किया | कार्यक्रम केंद्र के सत्यप्रकाश मिश्र सभागार के भरतमुनि-प्रेक्षागृह में सम्पन्न हुआ |

सारांश लेखन,संक्षिप्त लेखन ,पत्र लेखन ,आलेखन एवं निबंध आदि

मंच पर विराजमान मुख्य वक्ता डॉ.पृथ्वीनाथ पाण्डेय ,प्रभारी , डॉ.विधु खरे दास ,स.निदेशक डॉ.प्रकाश त्रिपाठी, डॉ. ऋचा द्वेदी तथा डॉ. कमलेश यादव

मुख्य वक्ता डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय प्रशिक्षणार्थियों को समझाते हुये

देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों / महाविद्यालयों से आये अध्यापक एवं शोध-छात्र तथा इलाहाबाद केंद्र के शिक्षक / कर्मी एवं बड़ी संख्या में उपस्थित छात्र-छात्राओं को मुख्य वक्ता डॉ.पृथ्वीनाथ पाण्डेय 'सारांश लेखन,संक्षिप्त लेखन ,पत्र लेखन ,आलेखन एवं निबंध आदि' विषय पर प्रतिभागिओं को समझाते हुए |

शोक संदेश का वाचन करते इलाहाबाद केंद्र के सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. प्रकाश त्रिपाठी

दिनांक : 21.02.2019

आज की कार्यशाला अंतरराष्ट्रीय मातृ भाषा दिवस को समर्पित

अपनी भाषा के शर्त पर हम किसी भी भाषा को स्वीकार नहीं करेंगे

डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय

"हिंदी में रोजगार की संभावनाएँ" विषय पर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रो.रामकिशोर शर्मा ने कहा कि- "आज के युग में हिंदी के क्षेत्र में रोजगार की पर्याप्त संभावनाएं हैं | तथा पर्याप्त मात्रा में भीड़ भी है, पर इस भीड़ में योग्य कम योग्य लोग ज्यादा हैं | हिंदी हमारी राजभाषा होने के कारण व्यावसायिक युग में व्यवसाय की प्रमुख भाषा है| आज देश-विदेश की विभिन्न कम्पनियाँ विज्ञापनों के माध्यम से हिंदी का प्रचार-प्रसार वैश्विक स्तर पर कर रहीं हैं| भरत में हिंदी में सबसे ज्यादा पत्र-पत्रिकाएं निकलती हैं जिसमें बड़ी मात्रा में कार्यकर्ताओं की आवश्यकता पड़ती है | भारत की संस्कृति और सभ्यता को जानने के लिए बड़ी मात्रा में लोग हिंदी सीख रहे हैं | भारत के विभिन्न प्रान्तों में उच्च शिक्षा के लिए हिंदी में पाठ्य सामग्री तैयार की जा रही है | अनुवाद के क्षेत्र में रोजगार की पर्याप्त संभावना होने के कारण हिंदी का प्रचार तेजी से हुआ |" उक्त विचार महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र ,इलाहाबाद की ओर से आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के समापन-सत्र के अंतर्गत अपनी भाषिक श्रृंखला के तहत व्यक्त किया | **कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि भाषाविद, समीक्षक डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय** ने बताया कि - हमारा लक्ष्य एक होना चाहिए | विभिन्न लक्ष्य देखकर हमें अपने उद्देश्य से भटकना नहीं चाहिए ,हमें मातृभाषा का सम्मान करना चाहिए | हमें किसी दूसरी भाषा से अलगाव नहीं बल्कि आपसी समझौता करना चाहिए | जिंदगी में भाषा की समझ को विकसित करना युवाओं का लक्ष्य होना चाहिए | विशिष्ट अतिथि न्यायाधीश श्री शिवेंद्र मिश्र ने कहा- कि दुनियां में गलती बताने वाले बहुत लोग हैं मगर उन

गलतियों को सही करने वाले कम | हिंदी भाषा नहीं अपितु मातृशक्ति है | प्रत्येक व्यक्ति को सामर्थ्य अनुसार मातृभाषा का प्रचार-प्रसार करना चाहिए | कार्यक्रम के मुख्य अतिथि इलाहाबाद राज्य विश्वविद्यालय के **कुलपति प्रो. राजेन्द्र प्रसाद** ने अपने उद्बोधन में कहा कि - ज्ञान का उद्देश्य महज रोजगार प्राप्ति ही नहीं है ,रोजगार अर्थव्यवस्था पर निर्भर होता है | हिंदी का ज्ञान पवित्र मार्गदर्शक बनेगा ,आपको अपनी दृष्टि व्यापक रखनी होगी | हिंदी में रोजगार मिले ,आप हिंदी तक ही सिमित रहें ,ऐसा नहीं होना चाहिए | शिक्षा रोजगारपरक होनी चाहिए ,इस उद्देश्य से ही ज्ञान प्राप्त करना ठीक नहीं | भारतीय अर्थव्यवस्था को रोजगारपरक बनाया जाना चाहिए | आपकी सोच व्यापक होनी चाहिए | हिंदी के अधययन-अध्यापन में साहित्य की व्यापक परिभाषा निहित होनी चाहिए | हिंदी को प्रतिष्ठित करके आप आगे बढे, हिंदी आपको रोजगार भी देगी इसके लिए आपके व्यक्तित्व में निखार होना चाहिए, जिससे किसी भी क्षेत्र में आप बेहतर प्रदर्शन कर सकें | आप हिंदी का सम्मान करें हिंदी आपका सामान करेगी | इसके लिए हमें अपनी मानसिकता को बदलना जरुरी है | इससे पूर्व महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के क्षेत्रीय केंद्र, इलाहाबाद में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, नई दिल्ली, भारत सरकार के पंडित मदन मोहन मालवीय राष्ट्रीय शिक्षक तथा शिक्षण अभियान (TLCHS) के अंतर्गत संचालित हिंदी शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा 15 से 21 फरवरी-2019 तक आयोजित सात दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला के सातवें दिन के मुख्य अतिथि प्रो.राजेन्द्र प्रसाद, मुख्य वक्ता प्रो. रामकिशोर शर्मा, विशिष्ट अतिथि डॉ.पृथ्वीनाथ पाण्डेय तथा न्यायधीश श्री शिवेंद्र मिश्र ने दीप प्रज्ज्वलित कर माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण किया तथा कार्यक्रम की गति को आगे बढ़ाया | तत्पश्चात केंद्र की प्रभारी डॉ. विधु खरे दास, सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. प्रकाश नारायण त्रिपाठी, आदि ने दीप प्रज्ज्वलित कर मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण किया | उसके बाद सभी लोगों ने खड़े होकर सरस्वती वंदना की | उसके बाद मुख्य वक्ता को केंद्र की प्रभारी डॉ. विधु खरे दास, डॉ. प्रकाश त्रिपाठी ने पुष्पगुच्छ, सूत की माला, प्रतीक चिन्ह अंगवस्त्रम भेंटकर अतिथियों का स्वागत किया |

देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों / महाविद्यालयों से आये अध्यापक एवं शोध-छात्र तथा इलाहाबाद केंद्र के शिक्षक / कर्मी एवं बड़ी संख्या में उपस्थित छात्र-छात्राओं को मुख्य वक्ता प्रो.रामकिशोर शर्मा , डॉ.पृथ्वीनाथ पाण्डेय 'हिंदी में रोजगार की संभावनाएं' विषय पर प्रतिभागिओं को समझाते हुए

कार्यक्रम में प्रतिभागी के रूप में आये देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों / महाविद्यालयों से आये अध्यापक एवं शोध-छात्र तथा इलाहाबाद केंद्र के शिक्षक / कर्मी एवं छात्र-छात्राएं बड़ी संख्या में उपस्थित रहे | ध्यातव्य है कि यह कार्यक्रम माननीय कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र की प्रेरणा से संचालित किया जा रहा है | प्रशिक्षणार्थियों में लोगों में- डॉ. अतुल कुमार मिश्र, डॉ. आकांक्षा मिश्र , डॉ.मोहिनी, डॉ.विनय श्रीवास्तव, रितु माथुर, शशि कुमारी, जितेन्द्र सिंह आदि बड़ी संख्या में उपस्थित रहे | ध्यातव्य है कि केंद्र की प्रभारी डॉ. विधु खरे दास कार्यक्रम की संयोजक हैं तथा सह संयोजक डॉ. प्रकाश त्रिपाठी हैं| कार्यक्रम का संचालन डॉ. कमलेश यादव ने किया | धन्यवाद ज्ञापन केंद्र के सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ. प्रकाश त्रिपाठी ने किया | कार्यक्रम केंद्र के सत्यप्रकाश मिश्र सभागार के भरतमुनि-प्रेक्षागृह में सम्पन्न हुआ |

हिंदी में रोजगार की संभावनाएं

मंच पर विराजमान मुख्य वक्ता प्रो. रामकिशोर शर्मा ,मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. राजेन्द्र प्रसाद,विशिष्ट अतिथि डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय ,न्यायाधीश श्री शिवेंद्र मिश्र ,प्रभारी,डॉ.विधु खरे दास स.निदेशक डॉ.प्रकाश त्रिपाठी तथा डॉ. कमलेश यादव

मुख्य अतिथि : कुलपति प्रो. राजेन्द्र प्रसाद

मुख्य अतिथि को पुष्प गुच्छ प्रदान कर सम्मानित करतीं केंद्र प्रभारी डॉ. विधु खरे दास,सहायक क्षेत्रीय निदेशक डॉ.प्रकाश त्रिपाठी

कार्यक्रम में अपना अनुभव बांटते प्रशिक्षणार्थी

न्यायाधीश श्री शिवेंद्र मिश्र जी को स्मृति चिन्ह देकर स्वागत करतीं प्रभारी , डॉ. विधु खरे दास एवं डॉ. प्रकाश नारायण त्रिपाठी

मंच का संचालन करते डॉ. कमलेश कुमार यादव